मध्यकालीन ग्रंथ चतुर्दण्डिप्रकाशिका में प्रयुक्त लय एवं ताल से सम्बन्धित शब्दावलियाँ

कुहू मालवीय
अतिथि प्रवक्ता, जे.आर.एफ., एस.आर.एफ.
संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

इस ग्रंथ की रचना व्यंकटमुखी ने की है। इस ग्रंथ में अलंकारों का वर्णन करने के पश्चात् व्यंकटमुखी ने तालों का वर्णन किया है। उन्होंने अलंकार को ही दो भागों में विभक्त किया है:–

1. The tala Structure is first given in tour of its angas (component parts)

2. Then a repeating periodic pattern (alamkara) '[1]

पहले भाग में आठ तालों का वर्णन किया है–

'The eight talas are:- Jhompata, dhruwa, mathya, rupaka, jhampa, triputa, atha, and, eka.'[2]

मत्थ्या एवं अथ तालों का नाम भिन्न–भिन्न प्रयोग किया गया है।

'Athya is also known as mantha, matta and matteya ; atha is also known as atta, ata ar even astha;[3]

इसके पश्चात् तालों के अंगों का वर्णन किया है–

'The ragas which constitute these talas are-

1. Anudruta (U) which has the duration of one short syllable (akshara) or one unit of time.
2. Druta (0) which has twice the value of anudruta
3. Drutavirama (0) with a duration of three syllables (1½ times the value of druta).
4. Laghushekhara (|) with a duration of 1½ times that of laghu.
5. Guru (S) which has a duration of ten short syllables.

[1] श्रीवेङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol. two, R. Santhyanarayana P. 109).
[2] श्रीवेङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol. two, R. Santhyanarayana P. 109).
[3] श्रीवेङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol. two, R. Santhyanarayana P. 109).

इस वर्णन के पश्चात् ताल के अंगों को निम्नलिखित रूप से दर्शाया है।[4]

No.	Name	Structure	No. of short syllabbes
1.	Jhompata	001_4	8
2.	Dhruva	(a) 1_4S_{10}, $1_61_41_4$	14
		(b) 1_4 1_4 1_6	14
3.	Mathya	01_4 1_4	10
4.	Rupaka	01_4	6
5.	Jhampa	(a) U 01_7	10
		(b) O_3 1_7	10
6.	Triputa	1000_3	7
7.	Atha	001_5 1_5	14
8.	Eka	(a) 0	2
		(b) 1_4	4

व्यंकटमुखी इन तालों को सुलादी ताल नाम से सम्बोधित करते हैं।

'इन तालों का प्रयोग केवल सेलगसुद प्रबन्धों में ही बताते हैं।[5]

इसके पश्चात सुलादी तालों के भिन्न प्रयोगों का भी वर्णन किया है–

Suladi Talas : Experimentation

The suladi talas were getting exclusively used in music and dance in south India. VM himself records some of these changes. Dhruva and Jhampa talas were each used in musical form (vinadandi dhruva and vaggeyakara jhampa), they were also used in dance forms like (natyadandi) Ek-tala was yielding place to aditala etc.[6]

व्यंकटमुखी ने कहा कि वीणा वादकों ने संगीत की रंजकता बढ़ाने के लिए ताल के अंगों का स्थान बदला।

"The talas and their structural variations were part of a renaissance which Karnataka music was experiencing on a under canvas.[7]

"This time marked the watershed of Indian music and witnessed the discreet of the latter into the Northern and southern streams. It also marked a renaissance. The changes which occurred in our music in this age were profound and far reaching Ecotic influences, especially and

[4] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 110
[5] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 110
[6] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 111
[7] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 112

far reaching. Ecotic influences especially the absorption and assimilation of Nagada shaped in large part the evaluation of tala in Hindustani music."[8]

"Transformations in tala in Karnataka music took place on the other hand, strictly within the limits of tradition, retaining historical continuity.[9]

इस समय संगीत में परिवर्तन आ रहा था। यही परिवर्तन तालों में भी आया। नगाड़ा वाद्य पर ताल प्रयोग हुई। इस काल में तालों का महत्व बढ़ने लगा।''[10]

व्यंकटमुखी ने ताल की परिभाषा इस प्रकार दी है–

"Tala may be defined as a device for measuring time in music and dancing." [11]

ताल गायन, वादन तथा नृत्य को नापने का कार्य करती है।

"When two or more performers execute the same event at the same moment; it generates continuity through the latter by contiguous juxtaposition, each event in a series may be exactly located on a linear axis against a continuously fluent tornporal background. Thus tala resolves the linearity of time into the two components of simultaneity and successively.[12]

अर्थात्– एक से अधिक कलाकार जब एक साथ प्रस्तुति देते हैं, तब उन्हें एक सूत्र में बांधने का कार्य 'ताल' से होता है।

"The measuring unit in tala is called avarta Avarta is a spirally recurrent, constant span of time."[13]

ताल के पूरे एक चक्र को आवर्तन कहते हैं।

Taal provides recurring rhythmic background to song and dance.

Pranas -

Rhythm kinematics of tala is also analysed into ton physical parameters called pranas. The ten pranas are kala, marga, kriya, anga, jati, laya, graha, yati and prastara.[14]

"The term tala drives from the etymon 'tal' which means a substrate (on which music and dance exist and subsist)."[15]

इसके पश्चात् व्यंकटमुखी ने मार्गी एवं देशी तालों का वर्णन किया है।

"Indian music tala was of two kinds marga taal and Desi taal

[8] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 112
[9] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 112
[10] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 113
[11] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 113
[12] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan पृ0 113
[13] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan पृ0 114
[14] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan पृ0 115
[15] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 116

पाँच मार्गतालों का नाम उल्लिखित किया है– चच्चतपुट, चाचपुट, षटपितापुत्रक, समयपकवेषटाक और उद्दघट्ट इसके अतिरिक्त अन्य सभी तालों को देशी ताल के अन्तर्गत रखा है।''[16]

मार्ग ताल के सिर्फ तीन अंग बताए–लघु, गुरू, प्लुत इन्हीं अंगों के अलग–अलग प्रयोग से देशी तालों का निर्माण होता है। तीन प्रकार की गति का वर्णन किया गया है। एक आवर्तन में 3, 4 या 5 होने पर वह क्रमशः तिस्र, चतस्र एवं खण्ड कहते हैं।''[17]

इसके बाद जातियों का वर्णन किया है। लघु के बदलने ने अलग–अलग जातियों का निर्माण होता है।

Laghu came to mean class as varies as a member or species there of Laghu decided the jatis in all talas.[18]

''तालों का वर्णन स्वर प्रकरण, गीतप्रकरण व प्रबन्धप्रकरण में किया है। सात सूलादि तालों का वर्णन दो बार किया है। तत्पश्चात पाँच मार्गी तालों का उल्लेख किया है। अंगों का वर्णन करते हुए पाँच अंगों का नामोल्लेख किया है। द्रुत, द्रुतविराम, लघु, लघुविराम, प्लुत। व्यंकटमुखी ने लय के विषय में निम्नलिखित वर्णन किया है।

"VM mentions the three layas, druta, madhya and vilambita.

लय के विषय में सिर्फ यही वर्णन प्राप्त होता है।''[19]

राग तत्व विबोध

''इसकी रचना श्रीनिवास ने की। यद्यपि इस ग्रन्थ का रचना काल ठीक से मालूम नहीं होता, परन्तु इन्होंने अहोबल के उद्धरण अपने ग्रन्थ में लिए है। इस आधार पर इन्हें अहोबल के बाद के समय का माना जाता है।''[20] ''इस ग्रंथ में श्रीनिवास ने 36'' लम्बे वीणा के तार पर स्वरों की स्थापना की। इसके अतिरिक्त ग्राम, मूर्च्छना, स्वर, राग आदि का उल्लेख किया है। किन्तु लय–ताल विषयक शब्दावली प्राप्त नहीं होती है।''[21]

''इस अध्याय में लय–ताल विषयक प्रचुर सामग्री प्राप्त हुई। प्रत्येक अध्याय के समान इस अध्याय में भी संगीत रत्नाकर प्रमुख ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत हुआ। सर्वप्रथम इस ग्रंथ में ताल की परिभाषा दी गई है। ताल के विभिन्न अर्थों को प्रस्तुत किया गया है। ताल के दो रुप–मार्ग एवं देशी तालों का वर्णन प्राप्त होता है। इसमें पाँच मार्ग ताल एवं 120 देशी तालों का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् ताल के दस प्राण–काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति एवं प्रस्तार का उल्लेख है। संगीत समय सार

[16] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan पृ0 116
[17] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan पृ0 117
[18] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan पृ0 120
[19] श्रीवेंङ्कटमुखिविरचिता चतुर्दण्डीप्रकाशिका (Vol.- two) R. Sathyanarayan P. 584
[20] चौधरी डॉ0 सुभद्रा – भारतीय संगीत में ताल और रूप विधान– पृ0 116
[21] शर्मा भगवत शरण – संगीत सार– पृ0 54

में भी लय–ताल रूपी शब्दावलियों का उल्लेख प्राप्त होता है। इसी प्रकार अन्य ग्रंथों में भी लय–ताल विषयक सामग्री प्राप्त होती है। अन्य ग्रंथकारों ने रत्नाकर में वर्णित शब्दावलियों में कुछ परिवर्तन करके अपने ग्रंथ में प्रस्तुत किया। कुछ ग्रंथकारों ने रत्नाकर की शब्दावलियों को उसी रूप में बिना किसी परिवर्तन के प्रस्तुत किया है। इसी कारण संगीत रत्नाकर मध्यकाल के प्रमुख ग्रंथ के रूप में हमारे सम्मुख प्रस्तुत होता है।

संदर्भ सूची

लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
कल्लिनाथ टीका	संगीत रत्नाकर (प्रथमोभागः)	आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली
पं0 कलिन्द जी	संगीत पारिजात (श्री अहोबल)	संगीत कार्यालय, हाथरस
गर्ग प्रभुलाल	ताल अंक (संगीत)	संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.)
गोडबोले मधुकर गणेश	तबला शास्त्र	अशोक प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद
भट्ट श्री विश्वम्भर नाथ	संगीत रत्नाकर एक अध्ययन	राधाकृष्ण प्रकाशन
मिश्र डॉ0 लालमणि	भारतीय संगीत वाद्य	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
सिंह डॉ. ठाकुर जयदेव	भारतीय संगीत का इतिहास	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
सेन डॉ0 अरुण कुमार	भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन	मध्य प्रदेश ग्रन्थ अकादमी भोपाल
शर्मा प्रो. स्वतंत्र	भारतीय संगीत वैज्ञानिक विश्लेषण	एटी0एन0 भार्गव एण्ड सनस न्यू कटरा, इलाहाबाद
शर्मा प्रो. स्वतंत्र	भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण	एटी0एन0 भार्गव एण्ड सनस न्यू कटरा, इलाहाबाद
शर्मा श्री भगवतशरण	भारतीय संगीत का इतिहास	संगीत कार्यालय, हाथरस